में कमी और पर्यावरण संरक्षण में सहायक है, बल्कि यह एक स्थायी और लाभकारी कृषि अर्थव्यवस्था के निर्माण का भी प्रभावी माध्यम बन सकता है।

अर्थशास्त्र

छत्तीसगढ़ में मशरूम उत्पादन ग्रामीण उद्यमियों के लिए कम निवेश में अधिक लाभ देने वाला एक परिवर्तनकारी अवसर सिद्ध हुआ है। अनेक किसान प्रारंभ में साधारण कमरों में कुछ सौ मशरूम बैग के साथ छोटे स्तर से शुरुआत करते हैं, किंतु परिश्रम, निरंतर सीख और नवाचार के माध्यम से वे धीरे-धीरे अपने उद्यम का विस्तार कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करते हैं। इस क्षेत्र में आय का स्तर काफ़ी भिन्न-भिन्न है कुछ किसानों की आय सीमित रहती है, जबकि अनेक किसान प्रतिवर्ष कई लाख रुपये तक की आय अर्जित कर रहे हैं, जो इस क्षेत्र की व्यापक संभावनाओं को दर्शाता है। जब किसान मूल्य संवर्धन, ऊर्ध्वाधर एकीकरण और प्रभावी विपणन रणनीतियों को अपनाते हैं, तो लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। मशरूम पाउडर, अचार, कॉफी तथा अन्य प्रसंस्कृत उत्पादों का निर्माण न केवल आय के स्रोतों में विविधता लाता है, बल्कि नए बाज़ारों तक पहुँच भी सुनिश्चित करता है। इस प्रकार, छोटे स्तर पर शुरू किया गया मशरूम उत्पादन एक टिकाऊ, लाभकारी और सम्मानजनक कृषि-आधारित उद्यम में परिवर्तित हो जाता है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ के मशरूम उत्पादक किसान ग्रामीण विकास की कहानी को नए सिरे से लिख रहे हैं। गृहिणियों, युवा उद्यमियों से लेकर सेवानिवृत्त पेशेवरों तक इन सभी के अनुभव यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय कृषि में नवाचार, स्थिरता और सशक्तिकरण एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। मशरूम उत्पादन अब केवल एक सहायक व्यवसाय नहीं रह गया है, बल्कि यह ग्रामीण उद्यमिता, पोषण सुधार और आजीविका सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। इन किसानों की यात्राएँ यह संदेश देती हैं कि यदि उचित जानकारी, संस्थागत सहयोग और बाज़ार तक पहुँच उपलब्ध हो, तो एक छोटा सा भू-खंड भी न केवल मशरूम बल्कि लाभ, आत्मसम्मान और आशा का स्रोत बन सकता है।

प्रस्तुतकर्ता :
पी. मूवेन्थन, पी. वेंकटेशन, गुंजन झा, सुमन सिंह एवं हेम प्रकाश वर्मा

अधिक जानकारी हेतु संपर्क: nasf9033nibsm@gmail.com

प्रकाशक :
डॉ. पी. के. राय
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2277333
वेबसाईट – www.nibsm.org
ई–मेल – director.nibsm@gmail.com

Publication No. - NIBSM/EF/2026/95

National Agricultural Science Fund

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष

Indian Council of Agricultural Research

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

मशरूम उद्यमिता से समृद्धिः छत्तीसगढ़ के अग्रणी उत्पादकों की प्रेरक कहानियाँ

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2277333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2277333
Website : www.nibsm.org, E-mail : director.nibsm@gmail.com

सारांश

छत्तीसगढ़ में मशरूम उत्पादन आज केवल एक वैकल्पिक फसल नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्परिभाषित करने वाला सशक्त माध्यम बन चुका है। सीमित भूमि, कम निवेश, न्यूनतम जल आवश्यकता तथा तीव्र उत्पादन चक्र जैसी विशेषताओं के कारण मशरूम खेती छोटे एवं सीमांत किसानों, महिलाओं और युवाओं के लिए अत्यंत उपयुक्त सिद्ध हो रही है। यह लेख पाँच प्रेरक मशरूम उद्यमियों की कहानियों के माध्यम से यह दर्शाता है कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण, मूल्य संवर्धन, विपणन रणनीति, जैविक एकीकरण तथा संस्थागत सहयोग के माध्यम से किस प्रकार एक छोटा प्रयास करोड़ों के उद्यम में परिवर्तित हो सकता है।मशरूम उत्पादन केवल आर्थिक सशक्तिकरण ही नहीं, बल्कि पोषण सुरक्षा, कृषि अपशिष्ट प्रबंधन, परिपत्र अर्थव्यवस्था और सतत कृषि प्रणाली के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

परिचय (विस्तारित एवं विश्लेषणात्मक)

भारतीय कृषि वर्तमान समय में विविधीकरण, तकनीकी उन्नयन और मूल्य श्रृंखला विकास के दौर से गुजर रही है। पारंपरिक फसलों की आय सीमित होने तथा कृषि लागत में वृद्धि के कारण किसान वैकल्पिक, उच्च लाभकारी एवं कम जोखिम वाले उद्यमों की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

इन्हीं विकल्पों में मशरूम उत्पादन एक उभरता हुआ " व्हाइट रिवोल्यूशन ऑफ नॉन-फार्म क्रॉप्स" कहा जा सकता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- 30-45 दिन का उत्पादन चक्र
- कम भूमि आवश्यकता (छोटे कमरे या शेड में संभव)
- कृषि अवशेषों (धान का पुआल, गेहूं का भूसा आदि) का उपयोग
- उच्च प्रोटीन (20–35%), विटामिन B-complex एवं D का स्रोत
- वर्षभर उत्पादन की संभावना

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य, जहाँ धान उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है, वहाँ धान के पुआल का उपयोग कर मशरूम उत्पादन एक अत्यंत उपयुक्त और लाभकारी मॉडल बन सकता है।

1. रसायन विज्ञान से खेती तक: श्रीमती नम्रता घई की यात्रा

श्रीमती नम्रता घई की उपलब्धियाँ इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण हैं कि किस प्रकार वैज्ञानिक ज्ञान, उद्यमशील दृष्टिकोण और निरंतर परिश्रम से एक साधारण विचार को सफल और टिकाऊ कृषि उद्यम में बदला जा सकता है। रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर तथा शासकीय महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहने के बाद, उन्होंने वर्ष 1997 में सुरक्षित सरकारी नौकरी छोड़कर पूर्णकालिक रूप से मशरूम उत्पादन को अपनाने का साहसिक निर्णय लिया। उस समय छत्तीसगढ़ में मशरूम उत्पादन अत्यंत सीमित था, किंतु इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय , डायरेक्टोरेट ऑफ मशरूम रिसर्च , सोलन तथा हरियाणा एग्रो इंडस्ट्रीज़ कॉरपोरेशन लिमिटेड, भोपाल जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से प्राप्त वैज्ञानिक प्रशिक्षण के आधार पर उन्होंने 10×10 वर्गफुट के छोटे से स्थान में मात्र 100 मशरूम बैग से अपना उद्यम आरंभ किया। निरंतर सीख, प्रयोग और नवाचार के माध्यम से उन्होंने इस छोटे प्रयास को एक एकड़ में फैले एकीकृत मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण इकाई में परिवर्तित कर दिया। वर्तमान में उनका उद्यम प्रतिवर्ष 50,000 से अधिक ऑयस्टर मशरूम बैग, 15–20 टन उच्च गुणवत्ता स्पॉन तथा मशरूम अचार, पाउडर, सूखे मशरूम और मशरूम बड़ी जैसे मूल्य संवर्धित उत्पादों का उत्पादन कर रहा है, जिससे उन्हें वर्षभर स्थायी आय प्राप्त होती है। उनके नवाचार-आधारित उद्यम से वार्षिक टर्नओवर ₹1 करोड़ से अधिक हो चुका है तथा लाभ–लागत अनुपात लगभग 2.5 और निवेश पर प्रतिफल 150 प्रतिशत तक पहुँच गया है, जो इस उद्यम की उच्च आर्थिक क्षमता को दर्शाता है। आर्थिक सफलता के साथ-साथ श्रीमती घई ने प्रशिक्षण, प्रदर्शन और मार्गदर्शन के माध्यम से 300 से अधिक किसानों, विशेषकर महिलाओं और युवाओं को मशरूम उत्पादन के लिए प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया है। उनके प्रयासों से रोज़गार सृजन, महिला सशक्तिकरण, कृषि अपशिष्ट का पुनर्चक्रण, पर्यावरण संरक्षण तथा ग्रामीण आजीविका में सुधार संभव हुआ है। इस प्रकार श्रीमती नम्रता घई न केवल छत्तीसगढ़ में एकीकृत मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन की अग्रणी उद्यमी के रूप में स्थापित हुई हैं, बल्कि उन्होंने टिकाऊ और समावेशी कृषि उद्यमिता के लिए एक अनुकरणीय एवं विस्तार योग्य मॉडल भी प्रस्तुत किया है।

उनकी कहानी केवल व्यक्तिगत सफलता की मिसाल नहीं है, बल्कि प्रशिक्षण, नवाचार और मूल्य संवर्धन पर आधारित बड़े स्तर की एग्रीप्रेन्योरशिप के लिए एक आदर्श मॉडल भी प्रस्तुत करती है।

2. श्रीमती गिरिजा कुंजाम: मशरूम के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के एक दूरस्थ गाँव से आने वाली श्रीमती गिरिजा कुंजाम आज महिला सशक्तिकरण की एक सशक्त प्रतीक बनकर उभरी हैं। उन्होंने वर्ष 2016 में मात्र 20×20 वर्गफुट के एक कमरे, कुछ मशरूम बैग और महिलाओं के एक छोटे समूह के साथ मशरूम उत्पादन की शुरुआत की। दृढ़ संकल्प और स्पष्ट दृष्टि के साथ प्रारंभ किया गया यह छोटा प्रयास धीरे-धीरे एक सफल उद्यम में परिवर्तित हो गया, जहाँ आज वे प्रतिवर्ष सैकड़ों मशरूम बैग का उत्पादन कर रही हैं। उनकी आय ₹30,000 से ₹55,000 के बीच है, जिससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है, बल्कि उन्होंने अपने समुदाय के लिए भी एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है। हालांकि, उनकी वास्तविक सफलता केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है। ज्ञान साझा करने, रोजगार के अवसर सृजित करने तथा यह सिद्ध करने के माध्यम से कि सीमित स्थान और संसाधनों में भी टिकाऊ आजीविका संभव है, उन्होंने अपने आसपास की अनेक महिलाओं को प्रेरित किया है। उनकी यात्रा यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि मशरूम उत्पादन ग्रामीण महिलाओं के लिए सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति का एक प्रभावी माध्यम बन सकता है।

3. श्री अर्जुन सावलय: सीमित शुरुआत से बाज़ार नवाचार तक

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के निवासी श्री अर्जुन कुमार सावलय ने अल्प समय में मशरूम आधारित नवाचारी उद्यमिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। वर्ष 2018 में कृषि विज्ञान केंद्र बिलासपुर से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने मात्र 450 वर्गफुट क्षेत्र में 500 मशरूम बैग के साथ अपनी शुरुआत की। प्रारंभ में ताज़े एवं सूखे मशरूम विक्रय से सीमित आय प्राप्त करने के बाद, उन्होंने शीघ्र ही मूल्य संवर्धन और उत्पाद विविधीकरण की अपार संभावनाओं को पहचान लिया। नवाचार को केंद्र में रखते हुए उन्होंने मशरूम प्रोटीन पाउडर, मशरूम कॉफी, पापड़, बड़ी और अचार जैसे उत्पाद विकसित किए, जिससे न केवल उत्पादों की शेल्फ लाइफ बढ़ी बल्कि बाज़ार भी विस्तृत हुआ। वर्तमान में वे प्रतिवर्ष लगभग 10,000 मशरूम बैग का संचालन करते हैं और नवाचार से पूर्व जहाँ उनकी आय ₹1.55–1.60 लाख प्रतिवर्ष थी, वहीं अब यह बढ़कर ₹5–6 लाख प्रतिवर्ष तक पहुँच गई है, जिसमें लाभ–लागत अनुपात 3.3 से 6.0 तक दर्ज किया गया है। उनके उत्पाद, विशेषकर मशरूम कॉफी और प्रोटीन पाउडर, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं में विशेष रूप से लोकप्रिय हो रहे हैं। श्री अर्जुन की उपलब्धियाँ यह स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि प्रसंस्करण, ब्रांडिंग और नवाचार के माध्यम से मशरूम उत्पादन को उच्च लाभ वाला और टिकाऊ कृषि उद्यम बनाया जा सकता है।

4. श्री चरणदास साहू: सीखने और नेतृत्व की विरासत रचते एक अनुभवी किसान

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के बनहर्डी ग्राम निवासी श्री चरण दास साहू ने सीमित संसाधनों के बावजूद मशरूम उत्पादन और मूल्य संवर्धन के माध्यम से एक सफल एवं स्थायी कृषि उद्यम स्थापित कर एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है। लगभग 25 वर्षों के कृषि अनुभव और मात्र 120 वर्गफुट क्षेत्र में स्थापित मशरूम इकाई के माध्यम से उन्होंने कम लागत में अधिक लाभ वाला व्यवसाय विकसित किया। कृषि अपशिष्ट आधारित सब्सट्रेट का उपयोग कर वे प्रतिवर्ष लगभग 1200 मशरूम बैग का उत्पादन करते हैं तथा ताज़े मशरूम के साथ-साथ मशरूम पापड़, बड़ी, अचार और पाउडर जैसे मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करते हैं। नवाचार से पूर्व जहाँ उनकी वार्षिक आय ₹70,000–1,00,000 के बीच थी, वहीं अब यह बढ़कर ₹2,00,000–2,50,000 प्रतिवर्ष हो गई है, जिसमें लाभ–लागत अनुपात 2.86 से 4.55 तक दर्ज किया गया है। उनकी सफलता का प्रमुख आधार कृषि विज्ञान केंद्र राजनांदगांव, कृषि विभाग एवं छत्तीसगढ़िया मशरूम समूह (NGO) से प्राप्त प्रशिक्षण एवं विपणन सहयोग रहा है। स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, किसानों को उद्यमिता की ओर प्रेरित करने और पोषणयुक्त उत्पाद उपलब्ध कराने में उनके योगदान के लिए उन्हें कृषि रत्न पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। श्री साहू का मॉडल यह सिद्ध करता है कि छोटे किसान भी वैज्ञानिक प्रशिक्षण और मूल्य संवर्धन के माध्यम से सफल उद्यमी बन सकते हैं।

5. श्री नेकी नवीन साहू: जैविक खेती के साथ मशरूम उत्पादन का एकीकृत मॉडल

दुग्ध प्रौद्योगिकी की पृष्ठभूमि रखने वाले छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले के श्री नेकी नवीन साहू ने खेती को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपनाते हुए एक अभिनव और टिकाऊ कृषि मॉडल विकसित किया है। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने वर्मी-कम्पोस्टिंग के साथ मशरूम उत्पादन की शुरुआत की। प्रारंभ में जहाँ वे केवल 50–70 मशरूम बैग का प्रबंधन कर रहे थे, वहीं आज उनका उद्यम बढ़कर लगभग 20,000 मशरूम बैग और 2 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैल चुका है। इस एकीकृत प्रणाली ने उन्हें उत्पादन लागत कम करने और लाभप्रदता बढ़ाने में उल्लेखनीय सहायता की है। वर्तमान में वे केवल मशरूम उत्पादन से ही अतिरिक्त ₹2 से ₹2.5 लाख प्रतिवर्ष की आय अर्जित कर रहे हैं। भविष्य में वे कैनिंग यूनिट स्थापित करने तथा अन्य मूल्य संवर्धन रणनीतियाँ अपनाने की योजना बना रहे हैं, जिससे उत्पादों की शेल्फ लाइफ बढ़ाई जा सके और नए बाज़ारों तक पहुँच बनाई जा सके। उनका फार्म यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वर्मी-कम्पोस्टिंग और मशरूम उत्पादन का एकीकरण न केवल मृदा स्वास्थ्य सुधार, कृषि अपशिष्ट